बेचारा गधा

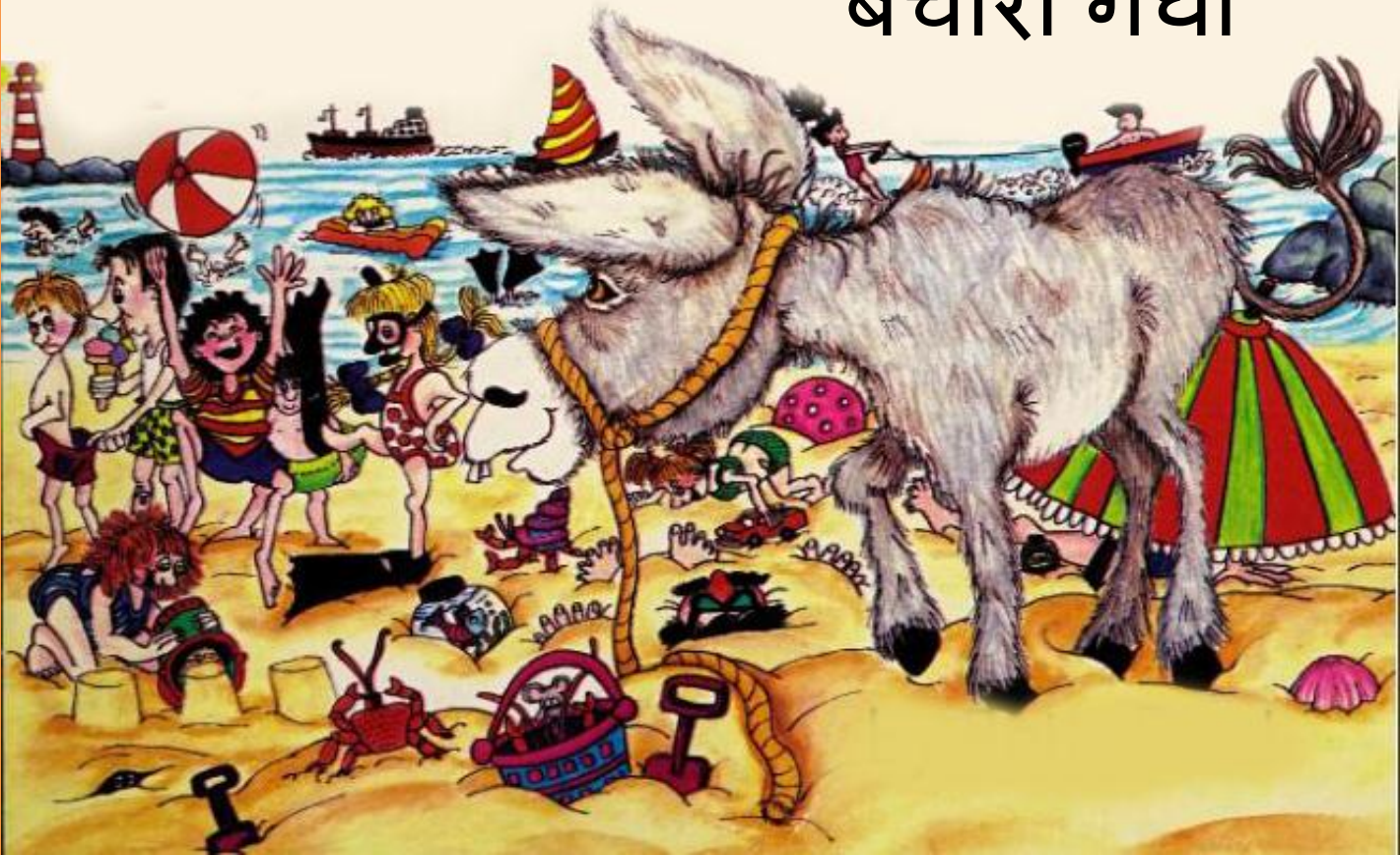

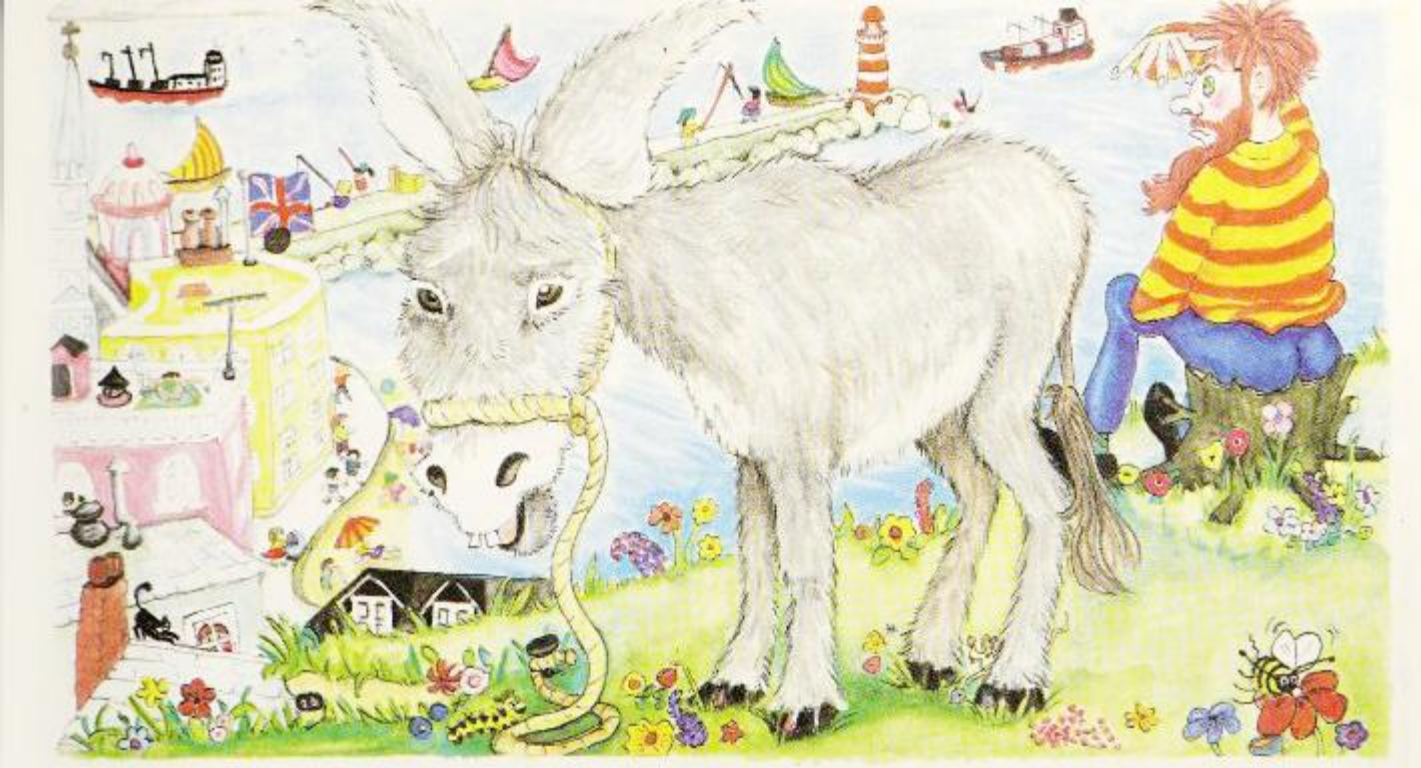

एक गधा, समुद्र के किनारे एक छोटे से शहर में रहता था.

उसका मालिक एक लंबी लाल दाढ़ी वाला आदमी था.

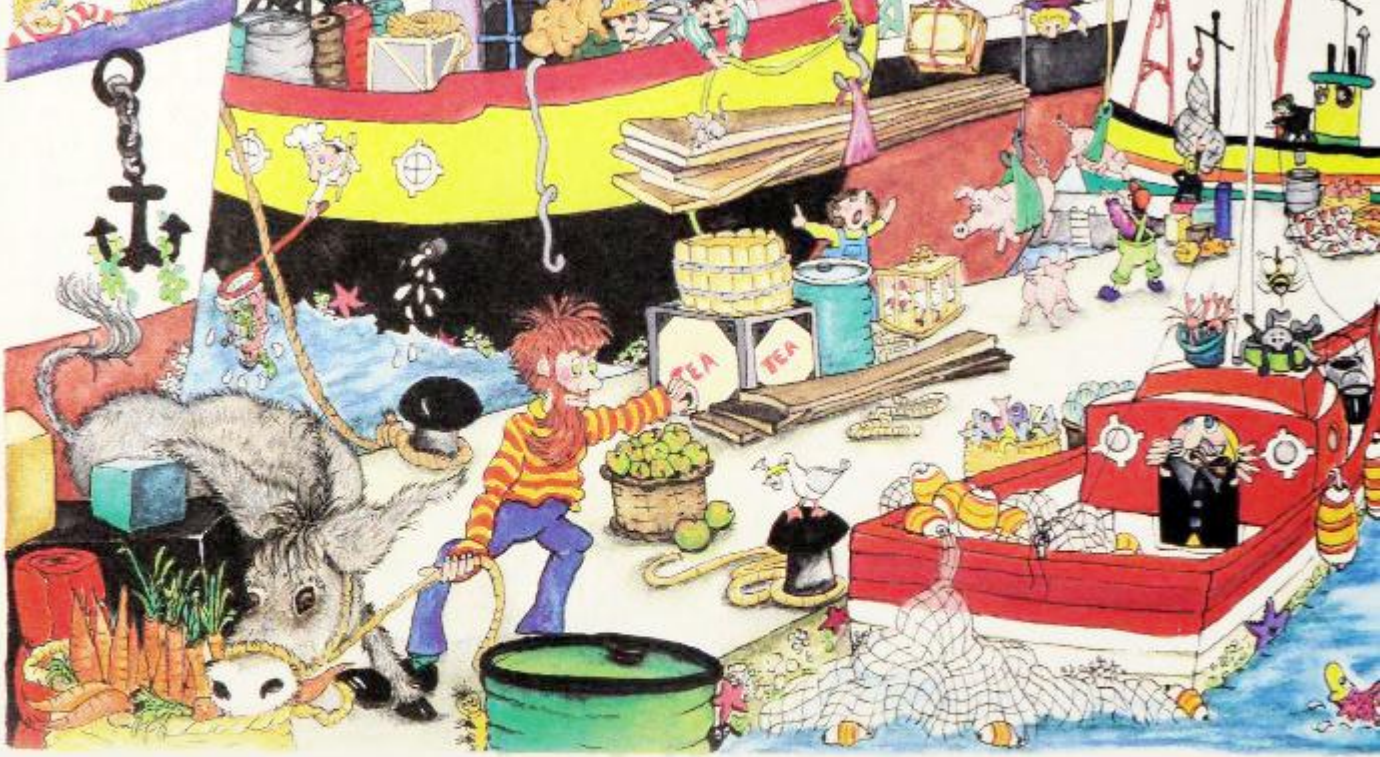

हर दिन वो गधे को बंदरगाह पर लेकर जाता था,

जहां बड़े-बड़े जहाज़ों से माल उतारा जाता था.

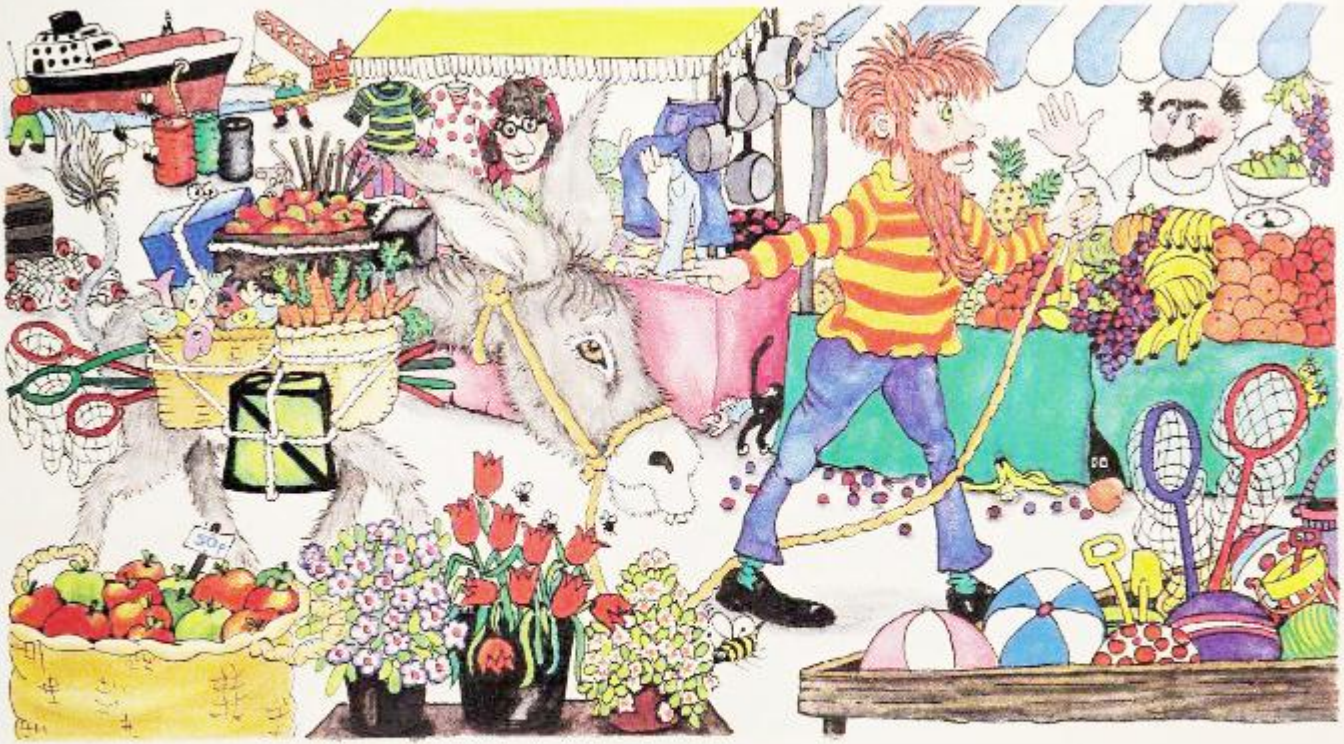

हर दिन मालिक, गधे की पीठ पर बक्से लादता था.

गधा उन भारी बक्सों को बाजार तक लेकर जाता था.

चलते-चलते वे बड़े जहाजों के सामने से गुज़रते थे. तब मालिक कोई गीत गुनगुनाता था. लेकिन गधा पूरा दम लगाकर बस भार को ही खींचता रहता था.

लाल दाढ़ी वाले आदमी को यह नहीं दिखता था कि उसका गधा पूरी तरह थक जाता था. ऐसा लगता था जैसे हर दिन गधे का बोझ और बढ़ रहा हो.

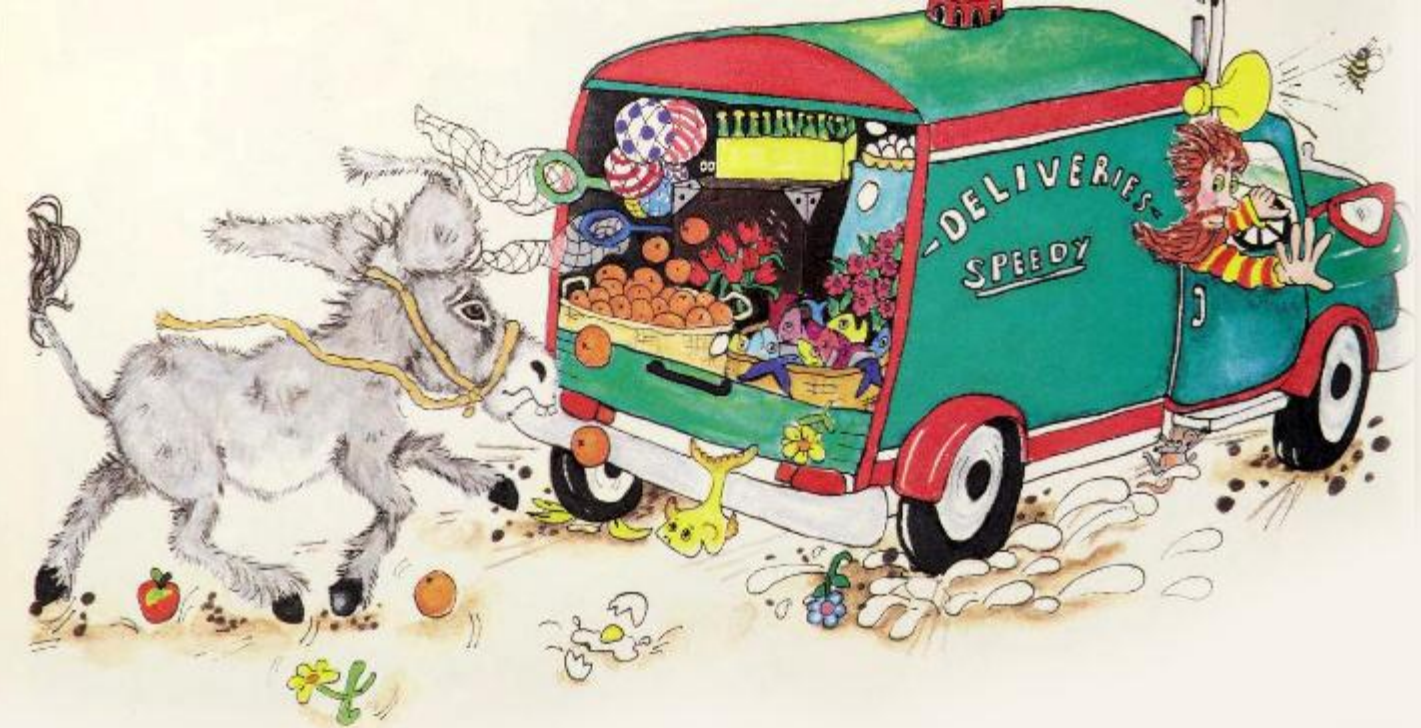

एक दिन गधे के मालिक ने एक नयी वैन खरीद ली.

फिर मालिक ने गधे से कहा, "अब मुझे तुम्हारी ज़रुरत नहीं है,"

और यह कहकर मालिक अपनी वैन स्टार्ट करके वहां से चला गया.

पहले तो गधा प्रसन्न हुआ. उसे लगा, "अब मुझे भारी बक्सों को नहीं ढोना पड़ेगा."
फिर उसके सामने एक सवाल खड़ा हुआ – “उसे रात को खाना कौन खिलाएगा?”

शायद उसे कोई नया मालिक मिल जाए जिसे गधे की ज़रुरत हो.

डाकिए को उसकी कोई ज़रुरत नहीं थी, क्योंकि उसके पास एक साइकिल थी.

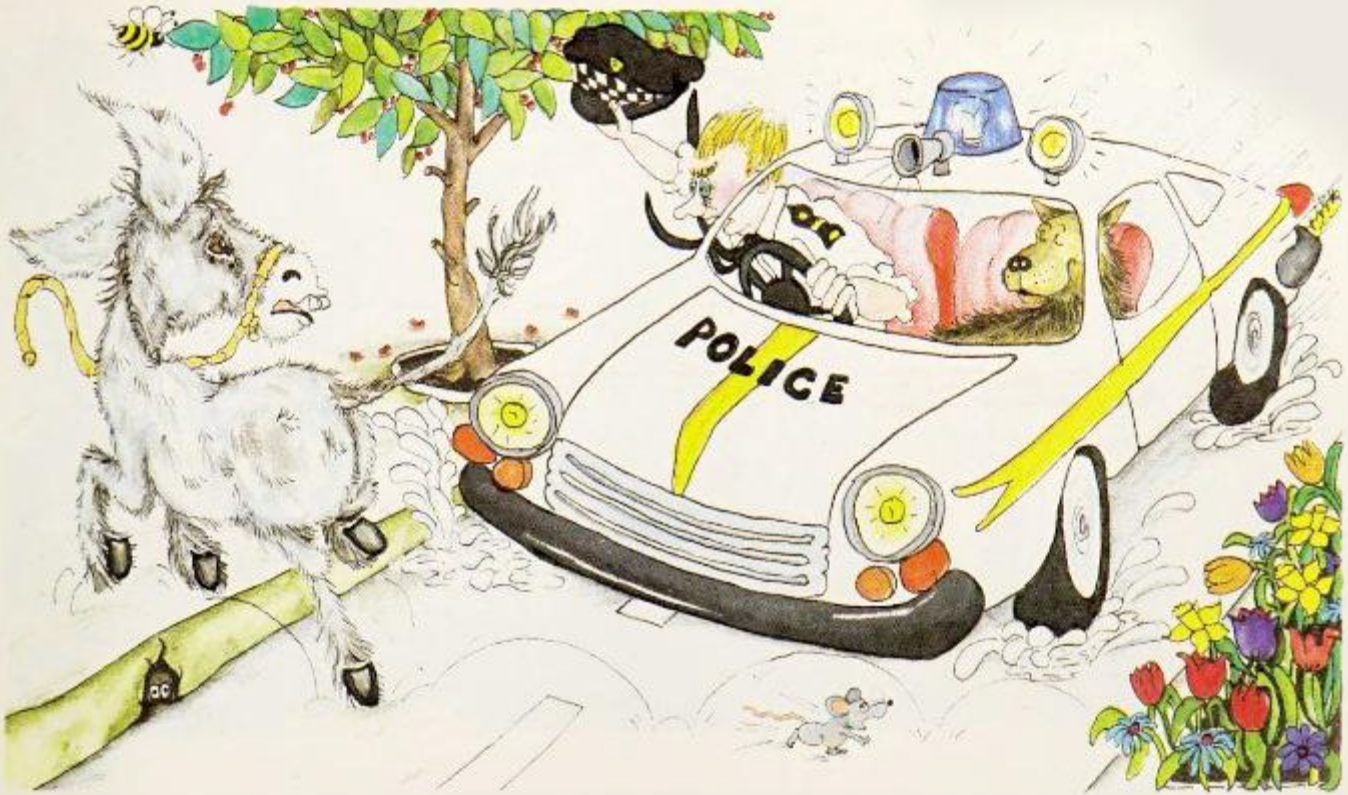

पुलिसमैन को भी गधे की ज़रुरत नहीं थी.

क्योंकि उसके पास एक तेज रफ़्तार वाली पुलिस कार थी.

किसी को भी गधा नहीं चाहिए था.

किसान को भी नहीं, क्योंकि उसके पास एक ट्रैक्टर था.

बेचारा गधा दिन भर बीच सड़क पर भटकता रहा.

अंत में समुद्र के किनारे उसे बच्चों की एक भीड़ दिखाई दी.

बच्चे टट्टू पर सवारी की प्रतीक्षा कर रहे थे. लेकिन भीड़ के कारण उन्हें बहुत देर इंतजार करना पड़ रहा था. उससे बच्चे ऊब गए थे.

"आओ, मेरी मदद करो," समुद्र तट पर खड़े टट्टू के मालिक ने कहा.
गधे ने तुरंत मदद की और उससे सभी बच्चों को मज़ेदार सवारी मिली.

बच्चों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि वे टट्टू की जगह गधे की सवारी कर रहे थे. फिर सभी बच्चे गधे के पास इकट्ठे हुए. उन्होंने उसे थपथपाया और उसे मिठाई खिलाई.

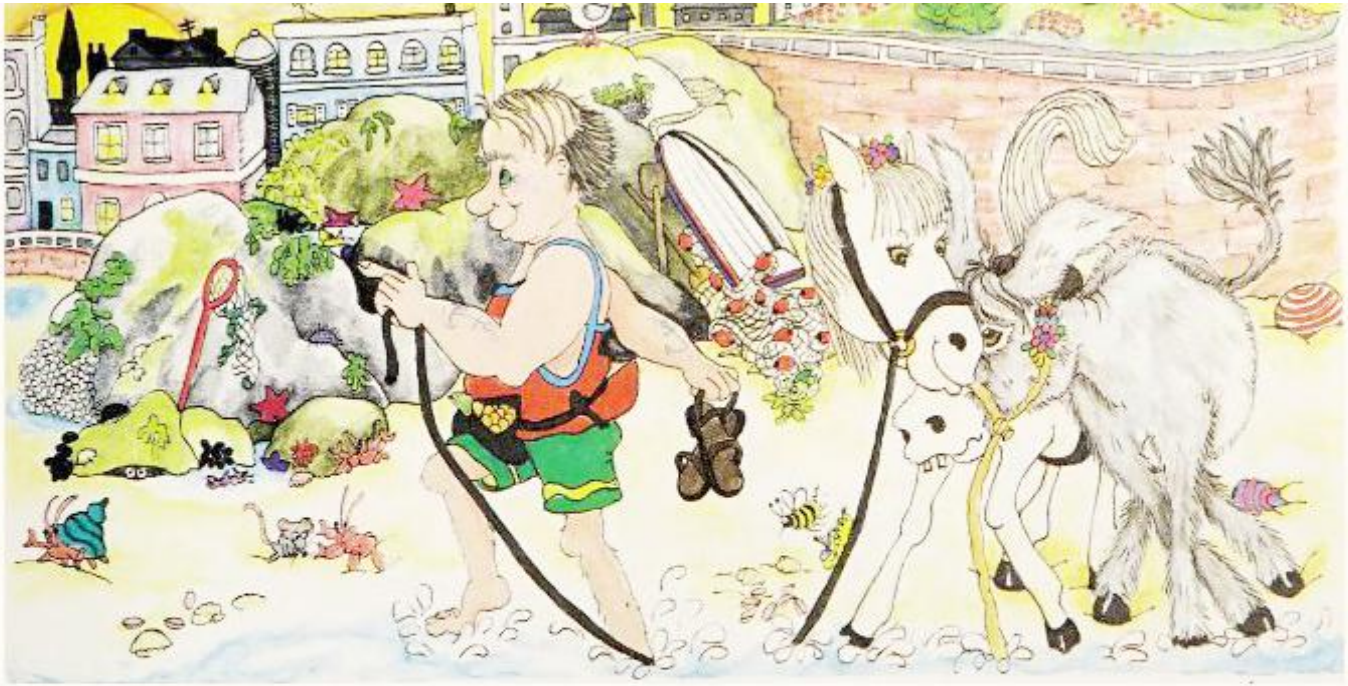

जब सूरज ढलने लगा तब आदमी ने अपने टट्टू से कहा, "चलो, अब हमें घर चलना चाहिए." लेकिन टट्टू चाहता था कि गधा भी उनके साथ घर जाए.

"ठीक है, गधे को भी आने दो," आदमी ने कहा. गधे ने नावों की रोशनी में बंदरगाह को देखा और सोचा, "अगर पुराने मालिक की वैन ख़राब हो गई तो?"

समाप्त